डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष चतुर्थ पत्र

मुक्तिबोध की कविता 'ब्रम्हराक्षस' की मूल संवेदना

'ब्रम्हराक्षस' मुक्तिबोध की बहुचर्चित एवं अति प्रसिद्ध कविता है। 'ब्रम्हराक्षस का शिष्य' शीर्षक से मुक्तिबोध की एक कहानी भी है। मुक्तिबोध के कालजयी काव्यसंग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' से दो कविताओं की विशेष रूप से चर्चा होती है, एक- 'अंधेरे में' और दूसरी - 'ब्रम्हराक्षस'। प्रस्तुत कविता 'ब्रम्हराक्षस' के संबंध में कुबेरनाथ राय ने कहा है -

"अन्य कविताओं में तो चेतन-उपचेतन के अनुभवों की यात्राएं हैं जबकि ब्रम्हराक्षस में बौद्धिक सचेत स्तर पर रहस्य के नकाब में अनुभवों का जुलूस है।"

'ब्रम्हराक्षस' कविता पाठकों को एक भिन्न अनुभव संसार में ले जाती है। इस कविता में ध्वनि और चित्र बिम्बों की भी अत्यंत अनूठी योजना की गई है। इसका कथ्य इतना भिन्न है कि इसे समझने के लिए पाठकों को मानसिक रूप से कथ्य में वर्णित संसार में पहुँचना पड़ता है। इसके लिए पाठकों से अत्यधिक संवेदनशीलता की अपेक्षा की जाती है। ब्रम्हराक्षस की छवि और गतिविधियां पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करती है-

"तन की मलिनता

दूर करने के लिए प्रतिपल

पाप-छाया दूर करने के लिए दिन-रात

स्वच्छ करने-

ब्रम्हराक्षस

घिस रहा है देह

हाथ के पंजे बराबर

बाँहें-छाती-मुँह छपाछप

खूब करते साफ

फिर भी मैल।"

ब्रह्मराक्षस बार-बार अपने तन-मन के मैल को धोने में जुटा रहता है। अहर्निश वह जाने-अनजाने में हुए पापों का प्रक्षालन करने में जुटा रहता है। वह आत्मपरिष्कार के लिए व्यग्र है। कवि आत्मपरिष्कार के लिए व्यग्र ऐसे ब्रम्हराक्षस का शिष्य होने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं और स्वयं भी आत्मपरिष्कार के लिए लालायित दिखते हैं। कवि की यह अभिलाषा अन्य कविताओं में भी व्यक्त हुई है -

"मैं ब्रम्हराक्षस का सजल-उर शिष्य

होना चाहता

जिससे कि उसका वह अधूरा कार्य

उसकी वेदना का स्रोत

संगत पूर्ण निष्कर्षों तलक

पहुँचा सकूँ।"

'ब्रम्हराक्षस' कवि का प्रिय प्रतीक रहा है, जिसका उन्होंने संदर्भगत कविताओं में भी प्रतीकात्मक प्रयोग किया है -

"हवाओं की लहरों के आकार-

किन्हीं ब्रम्हराक्षसों के निराकार"

मुक्तिबोध के काव्य में सुनसान बावड़ी, भैरों की मूर्ति आदि से सम्बंधित बिम्ब बार-बार मिलते हैं, जिनका एक प्रकार से उनके जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है। ब्रम्हराक्षस कविता में भी ये बिम्ब बार-बार आए हैं। इस संदर्भ में डॉ. प्रभाकर माचवे का कथन महत्वपूर्ण है-

"राजनंद गाँव में उनके भुतहे मकान के साँप, बिच्छु, घुग्घु, चमगादड़ों, ने उनकी कविता में हॉरर (भयानक) और एबसर्ड (विसंगति) की वीभत्स अर्धशून्यता को उभारा। उनकी कविता पैने ढंग से आधुनिक हो गई। मुक्तिबोध की कविता में मार्क्सवादी रुझान दिखाई पड़ता है।"

मुक्तिबोध की अधिकांश कविताओं की तरह 'ब्रम्हराक्षस' कविता भी रहस्य-रोमांचपूर्ण वातावरण की सृष्टि के साथ आरंभ होती है। स्वयं मुक्तिबोध के शब्दों में -

"आज से कोई बीस साल पहले की बात है, मेरा मित्र केशव और मैं जंगल में घूमने जाया करते थे। जब हम हाई स्कूल में थे, केशव मुझे निर्जन अरण्य प्रदेश में ले जाता। हम भर्तृहरि की गुहा, मच्छिंदरनाथ की समाधि आदि निर्जन एवं पवित्र स्थानों में जाते। मंगलनाथ के पास क्षिप्रा नदी बहुत गहरी, प्रचंड, मंथर और श्यामनील थी। उसके किनारे-किनारे हम भौगोलिक प्रदेशों का अनुसंधान करते।"

मुक्तिबोध रहस्य-रोमांच एवं भयावह वातावरण से ओत-प्रोत स्थलों पर वास्तव में भी भ्रमण करते रहते थे। कविता का आरंभ ही वातावरण की निर्मिति के साथ हुआ है -

"शहर के उस ओर खण्डहर की तरफ

परित्यक्त सूनी बावड़ी

के भीतरी

ठंढे अंधेरे में

बसी गहराइयाँ जल की.....

सीढ़ियाँ डूबीं अनेकों

उस पुराने घिरे पानी में .....

समझ में आ न सकता हो

कि जैसे बात का आधार

लेकिन बात गहरी हो।"

'लेकिन बात गहरी हो' में एक खास संकेत है, कवि किसी गहन, गंभीर समस्या को सुलझाने में निमग्न है और उस समस्या का रूप शांत-वीरान अंधकार में डूबी-अधडूबी सीढ़ियों कि तरह रहस्यपूर्ण है। मुक्तिबोध का ब्रम्हराक्षस आत्म-संशोधन और आत्म-परिष्कार के लिए व्याकुल है। कवि उस ब्रम्हराक्षस का संवेदनशील शिष्य बनना चाहता है, ताकि उसके द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्य को पूर्णता तक ले जा सके। ब्रम्हराक्षस को कवि ने जन-हित-चिंतन के प्रति व्यग्र और समर्पित चित्रित किया है।